प्रथम अध्याय

विषय प्रवेश

प्रथम अध्याय

विषय-प्रवेश

- साहित्य और समाज
- आधुनिक काल की पृष्ठभूमि
- आधुनिक काल की विभिन्न परिस्थितियाँ
- हिंदी उपन्यास परिभाषा और स्वरूप :
- हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार और उनके उपन्यास
- हिंदी कहानी परिभाषा और स्वरूप :
- हिंदी के प्रमुख कहानीकार
- उपन्यास और कहानी में अंतर
- आधुनिक हिंदी साहित्य पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव
- राजी सेठ की अपनी विचारधारा

प्रथम अध्याय

विषय-प्रवेश

साहित्य संसार के प्रति हमारी मानसिक प्रतिक्रिया अर्थात विचारों,भावों और संकल्पों की शाब्दिक अभिव्यक्ति है और वह हमारे किसी न किसी प्रकार के हित का साधन करने के कारण संरक्षणिय हो जाती है | साहित्य मनुष्य के भावों का परिष्कार कर; उसे अन्तर्दृष्टि देने और अपनी दुनिया को सही ढंग से समझने के लिए एक सांवेगिक, ऐन्द्रिय और वैचारिक अनुभूति की जमीन देता है |

साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति भी इस परिभाषा को पुष्ट करती है| साहित्य शब्द का अर्थ है-'सहित होने का भाव |'"साहित्यस्य भाव:साहित्य |' अब प्रश्न होता है कि 'सहित' शब्द का क्या अर्थ है ? 'सहित'शब्द के दो अर्थ है- (१) सह अर्थात साथ होना और (२) 'हितेन सह-सहितम्'अर्थात हित के साथ होना अथवा जिससे हित सम्पादन हो | बाबू गुलाबराय ने साहित्य की व्याख्या इन शब्दों में की है -"सह (साथ) होने के भाव को प्रधानता देते हुए हम कहेंगे कि जहाँ शब्द और अर्थ, विचार और भाव का परस्परानुकुलता के साथ सहभाव हो वही साहित्य है |"[१] मानव लिखित रूप में भाव और विचारों की अभिव्यंजना करता है, उसे सुगठित बनाने के लिए वह अनेक प्रकार के मानदंडो का स्वरूप निर्धारण करता है | उनमें साहित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है | अर्थात मनुष्य की भावाभिव्यंजना का महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली माध्यम साहित्य ही है |

साहित्य और समाज :-

व्यक्ति, ईश्वर की सफल अभिव्यक्ति है | वह इस बात का प्रमाण है कि ईश्वर का अस्तित्व है | इसी प्रकार साहित्य इस बात को प्रमाणित करता है कि कोई उसको अभिव्यक्त करने वाला है, जो चेतन है; जिसमें बुद्धि, मन, ज्ञान, विवेक, हृदय, भावनाएँ और कल्पनाएँ हैं, अर्थात साहित्य मनुष्य की सार्थक और सफल अभिव्यक्ति है | साहित्य मनुष्य का और इसीलिए समाज का प्रतिबिंब है | वह गुरु के समान मार्गदर्शन देने वाला,मित्र के समान उपदेशक और सहायक तथा कान्ता के समान मनोमुग्धकारी है|

हम जानते हैं कि साहित्य चैतन्य मनुष्य द्वारा प्रणीत, रसमय, अभिव्यक्ति है | व्यक्ति सामाजिक प्राणी है | समाज का निर्माण व्यक्ति के समूह के बिना नहीं हो सकता | मनुष्य जो कुछ विचार करता है, कहता है, लिखता है, वह केवल अपने लिए ही नहीं होता,वह समाज के अन्य व्यक्तियों से भी संबंधित होता है, प्रभावित होता है| मनुष्य पर उसके वातावरण, परिस्थितियों,रहन-सहन,शिक्षा तथा सामाजिक आचार-व्यवहार का प्रभाव अवश्य पडता है | निष्कर्ष यह है कि मनुष्य समाज बनाता है और समाज मनुष्य के मनुष्यकृत होने के कारण उसमें सामाजिक समस्याओं, भावनाओं और विचारों का अंकन होता है और इसलिए साहित्य,समाज के दर्पण के नाम से अभिहित किया जाता है| साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक तथा परस्पराश्रित है | साहित्य के बिना समाज अधूरा है और समाज के बिना साहित्य अधूरा है |

“साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है | वह अपनी समस्याओं का समाधान और अपने आदर्शों की स्थापना, समाज के आदर्शों के अनुरूप ही करता है |”[२]आचार्य

नन्ददुलारे बाजपेयी ने साहित्य शब्द की व्याख्या समाज के संदर्भ में इस प्रकार से की है- “साहित्य शब्द से हमारा आशय उन विशिष्ट और प्रतिनिधि रचनाओं से है,जो किसी युग के भावात्मक जीवन का प्रतिमान होता है, जो समाज या सामाजिक जीवन को भली या बूरी दिशा में ले जाने का प्रबल सामर्थ्य रखती है | वह समाज की सर्वाधिक और शक्तिशाली चेतना को प्रभावित करने वाला होता है |”[3]

साहित्य और समाज के संबंधों के विषय में डॉ.भगीरथ मिश्र ने कवित्वमय शैली में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये है | “साहित्य और समाज का अटूट और अगाढ़ संबंध है | समाज की जीवनधारा में साहित्य का कमलवत विकास होता है | समाज के शरीर का मुख साहित्य है | वह समाज की धरती पर उगनेवाले जीवन का फूल है | समाज के सुख-दुःखों की गंगा-यमुना की धाराओं के संगम पर साहित्य त्रिवेणी और तीर्थराज है | साहित्य सुगंध है,साहित्य मधुरिमा है | यह रूप, सौंदर्य और प्रगति के प्रभाव का साकार चित्र है | वह समाज की शुद्धि का परिणाम और अनुभव एवं अनुभूति का सार है | साहित्य समाज की चिरस्थायी सृष्टि है| व्यक्ति उत्पन्न होते हैं और समाप्त होते हैं | पर साहित्य उत्पन्न होने पर चिरकाल तक स्थिर रहता है, वरन् यह कहा जा सकता है कि उच्च साहित्य तो अमर ही है | साहित्य इस प्रकार समाज की अमर सृष्टि है | उसमें चित्रित जीवन का रूप शाश्वत है | आज हमारे बीच राम, रावण, बुद्ध, ईसा, दुष्यन्त, सीता, शकुंतला आदि नहीं, परंतु साहित्य के बीच वे आज भी जीवित हैं | इतना ही नहीं, जो समाज में कभी नहीं थे, वे साहित्य में उत्पन्न हुए और अमर भी हैं | इस प्रकार साहित्य समाज की सृष्टि होता हुआ भी अपनी निजी समाज की रचना करता है | अत: साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है |”[४]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साहित्यकार समाजरूपी रगंमंच का अभिनेता भी है और दर्शक भी | किसी भी भाषा के साहित्य को देखे कवि अथवा लेखक अपने युग की सामाजिकता का चित्रण अपने साहित्य में करता है | हिंदी साहित्य के वीरगाथाकाल के साहित्य में तत्कालीन सामाजिक चेतना और जीवनदर्शन की अभिव्यक्ति है | भक्तिकालीन साहित्य समाज को जहाँ एक ओर धार्मिक संबल से उत्साहित करता है, वहाँ दूसरी ओर उस काल की सामाजिक पृष्ठभूमि भी अपने में सँजोए है | रीतिकालीन साहित्य तत्कालीन समाज के नैतिक पतन का सजीव बोध कराता है, तो आधुनिक काल के साहित्य में बदलने वाले वादों-प्रवादों का मूल कारण बदलने वाली सामाजिक चेतना है |

साहित्य ने संसार में मनुष्य के विचारों को गति दी है, समाज की परम्पराओं में परिवर्तन करवाया है, क्रांतियों का सृजन किया है तथा राष्ट्र, धर्म, जाति और वर्गगत भावनाओं को मिटाकर मानव को विश्वबंधुत्व की भावना से अनुप्राणित भी किया है | श्री जैनेंद्र कुमार ने ठीक ही लिखा है- “साहित्य सामाजिक अवस्था से आगे होकर चलता है | वह वर्तमान ही प्रतिबिंबित नहीं करता, भविष्य की संभावनाओं को भी धारण करता है |”[५]व्यक्ति नश्वर है, सत्साहित्य शाश्वत है | साहित्यकार स्रष्टा भी होता है और द्रष्टा भी | वह हमें केवल अतीत और वर्तमान की सामाजिक गतिविधियों से ही परिचित नहीं कराता, भविष्य की संभावनाओं का संकेत भी देता है | साहित्य में सहित का भाव, सामाजिकता से पूर्ण है और इसीलिए साहित्य समाज का प्रतिबिंब भी है और प्रतिनिधि भी | समाज से साहित्य बनता है और समाज को भी वह बनाता है |

आधुनिक काल की पृष्ठभूमि :-

मानव इतिहास और साहित्य का प्रगाढ़ संबंध है | इतिहास की प्रत्येक घटना,प्रत्येक परिस्थिति साहित्य को प्रभावित करती है | राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिवर्तन के साथ साथ साहित्य में भी परिवर्तन होता रहता है | आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल के साहित्य का अध्ययन करते समय हमने देखा कि इन युगों की विविध परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य पर कितना पड़ा है | आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रादुर्भाव के मूल में भी परिस्थितियों के बदलाव की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है | मानव इतिहास और साहित्य के इतिहास में इतना अंतर अवश्य है कि मानव इतिहास में कोई घटना किसी एक समय विशेष पर घटित हो जाती है और उसी तिथि से हम युग परिवर्तन की घोषणा कर देते है, जब कि साहित्य के इतिहास में ऐसा आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता | साहित्य के इतिहास में युग परिवर्तन की एक लम्बी पृष्ठभूमि और परंपरा रहती है जो किसी नियत तिथि से आरंभ नहीं होती | यही कारण है कि हम साहित्य के किसी युग विशेष का निर्धारण एक निश्चित तिथि से नहीं कर सकते | हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के प्रादुर्भाव से बहुत से पूर्व ही इसकी पृष्ठभूमि बनना आरंभ हो गई थी |

आधुनिक काल की विभिन्न परिस्थितियाँ:-

हिंदी साहित्य में आधुनिक काल के प्रादुर्भाव के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का विवेचन करने से पूर्व हमें आधुनिक काल के नामकरण पर विचार करना चाहिए |'आधुनिक'शब्द दो अर्थो-मध्यकाल से भिन्नता और नवीन इहलौकिक दृष्टिकोण की सूचन देता है | मध्यकाल अपने अवरोध, जड़ता और रूढ़िवादिता के कारण स्थिर और एक रस हो चूका था, एक विशिष्ठ ऐतिहासिक प्रक्रिया ने उसे पुनःगत्यात्मक बनाया |

मध्यकालीन जड़ता और आधुनिक गत्यात्मकता को साहित्य और कला के माध्यम से समझा जा सकता है | रीतिकाल में कला और साहित्य अपने-अपने कथ्य, अलंकृति और शैली में एकरूप हो गए थे | वे घोर श्रृंगारिकता के बंधे घाटों से बह रहे थे | न छंदो में वैविध्य था,न विन्यास में,एक ही प्रकार के छंद एक ही प्रकार का ढंग | आधुनिक काल में बंधे घाट टूट गये और जीवन की धारा विविध स्त्रोतों में फूट निकली |

'आधुनिक'शब्द में जो दूसरा अर्थ ध्वनित होता है, वह है - इहलौकिक दृष्टिकोण | धर्म, दर्शन,साहित्य चित्र आदि सभी के प्रति नये दृष्टिकोण का आविर्भाव हुआ | मध्यकाल में पारलौकिक दृष्टि से मनुष्य इतना अधिक आच्छन्न था कि उसे अपने परिवेश की सुध ही नहीं थी,पर आधुनिक युग में वह अपने पर्यावरण के प्रति अधिक सतर्क हो गया | आधुनिक युग की पीठिका के रूप में इस देश में जिन दार्शनिक चिंतकों और धार्मिक व्याख्याताओं का आविर्भाव हुआ,उनकी मूल चिंतनधारा इहलौकिक ही है | सुधार,परिष्कार और अतीत का पुनराख्यान नवीन दृष्टिकोण की देन है |

राजनीतिक परिस्थिति :-

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का आरंभ सन् १८५७ में हुआ,पर भारतवर्ष के आधुनिक बनने की प्रक्रिया की शुरुआत एक शताब्दी पूर्व (१७५७) तभी हो गयी थी जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी के युद्ध में हराया था | सिराजुद्दौला के बाद संपूर्ण बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया | १७६४ ई.में बक्सर के युद्ध में मुगल-सम्राट शाहआलम भी पराजित हुआ,१७६५ में कड़ा के युद्ध में उसकी रही-सही शक्ति भी समाप्त हो गयी | सम्राट ने अब बंगाल बिहार और उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को बख्श दी | किन्तु संपूर्ण देश

पर आधिपत्य जमाने के लिए अंग्रेजों को दो अन्य शक्तियों को पराजित करना शेष था | वे शक्तियाँ थी-मराठा और सिक्ख | सिक्ख तो पंजाब की सीमा में थे, परन्तु मराठों का प्रभाव बहुत व्यापक था |

पारस्परिक फूट और संघर्ष के कारण असी (१८०३) और लासवारी (१८०३) के युद्धों में मराठा विजित हो गये और उनकी संघशक्ति समाप्त हो गयी | १८४९ ई.में सिखों को पराजित करने के बाद संपूर्ण देश - अंग्रेजों के अधीन हो गया | १८५६ ई.में अवध भी अंग्रेजों के राज्य में सम्मिलित कर लिया गया | इस विजय के कारण अंग्रेजों का मदोन्मत्त हो जाना स्वाभाविक था | उनकी नीतियों से असंतुष्ट देशी राजाओं ने एकजुट होकर १८५७ ई.में व्यापक स्तर पर विद्रोह किया | फलस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी समाप्त कर दी गयी और भारतवर्ष ब्रिटीश साम्राज्य का उपनिवेश बन गया | अंग्रेजों ने अपनी आर्थिक,शैक्षणिक, प्रशासनिक नीतियों में परिवर्तन किया | इस देश के लोग भी नए संदर्भ में कुछ नया सोचने और करने के लिए बाध्य हुए | साहित्य मनुष्य के बृहत्तर सुख दुःख के साथ पहली बार जुड़ा |

आर्थिक परिस्थिति :-

आधुनिक काल के पूर्व भारतीय गाँवों का आर्थिक ढाँचा प्राय: अपरिवर्तनशील और स्थिर रहा | गाँव अपने आप में स्वत:पूर्ण आर्थिक इकाई थे | इस अपरिवर्तनशील को लक्ष्य करते हुए सर चार्ल्स मेटकाफ ने लिखा है-“गाँव छोटे-छोटे गणतंत्र थे | उनकी अपनी आवश्यकताएँ गाँव में पूरी हो जाती थी | बाहरी दुनिया से उनका कोई संबंध नहीं था | एक के बाद दूसरा राजवंश आया, एक के बाद दूसरा उलट-फेर हुआ | हिंदू, पठान, मुग़ल, सिक्ख, मराठा के राज्य बने और बिगड़े, पर गाँव वैसे के वैसे बने रहे |”[६]

गाँव की जमीन पर सबका समान अधिकार था | किसान खेती करता था; लुहार, बढ़ई,कुम्हार, नाई, धोबी, तेली आदि गाँव की अन्य आवश्यकताएँ पूरी करते थे | एक जाति का व्यक्ति दूसरी जाति का व्यवसाय नहीं करता था | नगर और गाँव अपनी - अपनी इकाईयों में पूर्ण और एक-दूसरे से असंबध्द थे | अंग्रेजी व्यापारियों ने इस देश को अपना बाजार बनाने के लिए यहाँ के बारीक धंधों को नष्ट कर दिया |

अंग्रेजों की नयी व्यवस्था से जनता को घोर संकट का सामना करना पड़ा | खेत अनेकानेक टुकडों में बँट गये | किसान और सरकार के बीच बहुत से मध्यस्थ हो गये और पैदावार घटती गयी | ग्रामीण उद्योगधंधों के नष्ट होने पर अधिक से अधिक लोग खेती पर आश्रित हो गये | बहुत से शहरी उद्योग भी अंग्रेजों की कृपा से कालकवलित हो गये | फिर भी पुरानी अर्थव्यवस्था के स्थान पर जिस नयी अर्थव्यवस्था को लागू किया गया, उससे अनजाने ही ऐतिहासिक विकास की ओर अग्रसर हुआ | गाँवों की जड़ता टूटी,गाँव दूसरे गाँवों और शहरों के संपर्क में आने के लिए बाध्य हुए | घेरे में बंधी हुई अर्थव्यवस्था राष्ट्रोन्मुख हो चली |

उन्नीसवीं शताब्दी में दुनियाभर में यातायात के साधनों में परिवर्तन हुआ | भारतवर्ष में रेल, बस, स्टीम शिप आदि ने लोगों में राष्ट्रीयता और वैचारिक एकता की भावना भरने में सहायता पहुँचायी | किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास पर ही यातायात का विकास निर्भर करता है | यद्यपि अंग्रेजों ने इस देश में नयी अर्थव्यवस्था, औद्योगिकता, संचार सुविधा, प्रेस आदि को अपने निजी स्वार्थो के लिए स्थापित किया, फिर भी इससे भारत का हित हुआ |

सामाजिक स्थिति :-

ब्रिटीश राज्य स्थापना के कारण भारत की अर्थनीति, शिक्षापद्धति, यातायात के साधनों आदि में बुनियादी परिवर्तन हुए | आधुनिक युग में ब्राम्हो समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज ने पुराने धर्म को नये समाज के अनुरूप ढालने का प्रयास किया | आधुनिक भारत की नींव का पहला पत्थर राजा राममोहन राय ने रखा | उन्होंने १८२८ में 'ब्राम्हो समाज' की स्थापना की | कर्मकांड और अंधविश्वास का विरोध करने के लिए उन्होंने उपनिषदों का उपयोग किया | मूर्तिपूजा को धर्म का बाह्याडंबर माना | वे अंधश्रध्दा और रुढ़ियों के विरुद्ध लड़े | विधवा-विवाह तथा स्त्री-पुरुष के समानाधिकार का समर्थन किया |

सन १८६७ में महादेव गोविंद रानडे ने 'प्रार्थना समाज' की स्थापना की | सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध वे निरंतर संघर्ष करते रहे | स्वामी विवेकानंदजी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की | सामाजिक कार्यो में उनकी गहरी रूचि थी | मानवीय समता के विश्वासी होने के कारण जाति, संप्रदाय, छूताछूत आदि का विरोध किया | गरीबों के प्रति उनकी सहानुभूति प्रगाढ़ थी | शिक्षित समुदाय तथा उच्चवर्ग की भर्त्सना करते हुए उन्होंने लिखा है-"जब तक देश के हजारों लोग भूखे हैं, अज्ञानी हैं मैं प्रत्येक शिक्षित वर्ग को धोखेबाज कहूँगा | गरीबों के पैसे से पढ़कर भी वे उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते | उच्चवर्ग शारीरिक और नैतिक दृष्टि से मर चूका है |"[७]

सन १८६७ में दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की | अस्पृश्यता पर जितना बल इस आंदोलन ने किया, उतना और किसी ने नहीं |आर्य समाज का प्रसार मुख्यत: मध्यवर्ग के बीच हुआ, इसलिए इसका कार्य अधिक क्रांतिकारी सिद्ध हो चूका | महाराष्ट्र ने देश की गरीबी, भूखमरी आदि का पूरा दायित्व अंग्रेजी राज्य पर डाल दिया | चिपलूणकर के निबंधों में देश के पराभव का एकमात्र जिम्मेदार विदेशी

शासन को ठहराया था | तिलक ने जनता को एक करने के लिए गणेश पूजा की शुरूआत की |

सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत जो छूताछूत,अंधश्रध्दा, बाह्याडंबर, सतीप्रथा,विधवा विवाह,वर्गप्रथा आदि समस्याएँ थी, इन सभी समस्याओं का निराकरण करने में उपर्युक्त आंदोलनों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है |

सांस्कृतिक और साहित्यिक स्थिति :-

नवीन परिस्थिति तथा परिवेश के कारण साहित्य, संगीत और कला को भी संकट का सामना करना पड़ा | उनको आश्रय देने वाले केंद्र तेजी से टूटने लगे | कला और संगीत का विशेष घरानों से संबंध हुआ करता था | ये घराने इनकी स्वरूप रक्षा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संलग्न रहा करते थे | मध्यकाल में भक्तकवियों के अतिरिक्त अकबर, जहांगीर, मानसिंह आदि ने संगीत को प्रश्रय दिया | मुगल-सल्तनत के समाप्त होने पर संगीत की मौलिकता समाप्त हो गयी |

भारतीय पूर्नजागरण के फलस्वरूप रविबाबू ने नये संगीत की कल्पना की,जिसमें पूर्व और पश्चिम के स्वरों का मिश्रण था | १९१९ में अखिल भारतीय संगीत परिषद की स्थापना हुई | आधुनिक काल में कुछ भारतीय चित्रकला पश्चिम का अनुकरण करती रही, पर पश्चिम ढंग के जिन तैल चित्रों का निर्माण किया गया | वे अपनी अभिव्यक्ति में मध्यकालीन थे | ट्रावनकोर के राजा रवि वर्मा के चित्रों की विषयवस्तु पौराणिक और धार्मिक थी | महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' में वर्मा के अनेक चित्रों को प्रकाशित किया | १८५४ में कलकत्ता आर्ट स्कूल की स्थापना के साथ ही भारतीय चित्रकला में नया मोड आया | सन १९०७ में गगनेंद्रनाथ ठाकुर ने इंडियन सोसाइटी

ऑफ ओरिएंटल आर्टस की स्थापना की | इन प्रयत्नों का फल यह हुआ कि भारतीय चित्रशैली का एक स्वतंत्र्य रूप निर्मित हुआ |

भारतीय धर्म और संस्कृति के संबंध में अंग्रेज प्रशासकों और ईसाई मिशनरियों के आक्रामक रूप के कारण धर्मसुधारकों के लिए धारदार मार्ग से गुजरना आवश्यक हो गया | एक ओर उन्हें विदेशियों के समक्ष अपने धर्म और संस्कृति की वकालत करनी पड़ी | पुराणपंथी और सुधारक दोनों ने अपने मत प्रचारार्थ धर्मशास्त्रों की शरण ली |

नवजागरण का अधिक प्रभाव बंगला-साहित्य पर पड़ा | आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखा है 'संवत १९२२ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपने परिवार के साथ जगन्नाथ गये | उन्होंने बंगाल में नये ढंग के सामाजिक, देश - देशांतर संबंधी ऐतिहासिक, पौराणिक नाटक,उपन्यास आदि देखे और हिंदी में वैसी पुस्तकों के अभाव का अनुभव किया | अपने युग की संवेदनाओं को आत्मसात करके ही भारतेन्दुजी ने नये ढंग की साहित्य रचना का आरंभ किया | आधुनिक काल का अधिकांश साहित्य अपने को पहचानने तथा पाश्चात्य बंधनों से छूटकारा पाने का इतिहास है |

हिंदी उपन्यास: परिभाषा और स्वरूप :-

'उपन्यास' शब्द की एक विधाविशेष के रूप में प्रतिष्ठा आधुनिक युग की देन है | उपन्यास शब्द की निष्पति उप+नि+आस+अच धातु तथा प्रत्यय आदि के योग से हुई है | इसका व्युत्पत्ति अर्थ होता है 'समीप रखना' | अमरकोष में इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार है - 'उपन्यास प्रसादनम्' अर्थात उस रचना से मानव आत्मा को प्रसादित आनंदित करे | अंग्रेजी में उपन्यास शब्द के लिए 'नॉवेल' शब्द का प्रयोग किया जाता है | जिसका अर्थ 'नवीन' होता है | 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग पहले बंगला में अंग्रेजी 'नॉवेल' के पर्यायवाची के रूप में

आरंभ हो चुका था | इसे देखते हुए माना जा सकता है कि साहित्यिक विधा के रूप में 'उपन्यास' शब्द हिंदी को बंगला साहित्य से प्राप्त हुआ है |

रिचर्ड बर्टन :-

"उपन्यास सम-सामायिक समाज और उसके मंगलकारी तत्वों का वह व्यापक अध्ययन है,जो प्रेमतत्व की संचालिका शक्ति से अनुप्रेरित रहा करता है, क्योंकि प्रेम ही मानव मात्र को परस्पर सामाजिक बंधन में बँधने में समर्थ हुआ करता है |"[८]

डॉ.श्यामसुन्दर दास :-

"उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है |"[९]

प्रेमचंद :-

"मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र-मात्र मानता हूँ | मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है |"[१०]

मुलर :-

"उपन्यास मानवीय अनुभव का उदात्त अथवा आदर्शवादी प्रतिनिधित्व करता है और इसलिए यह अनिवार्यतः जीवन की टिका है |"[११]

हिंदी उपन्यास का स्वरूप :-

'उपन्यास' गद्य का नव विकसित रूप है जिसमें कथावस्तु, चरित्रचित्रण, संवाद आदि तत्वों के माध्यम से यथार्थ और कल्पना मिश्रित कहानी आकर्षक शैली में प्रस्तुत की जाती है | उपन्यास का कथानक और इसके चरित्र यथार्थ जीवन के प्रतिनिधि होते हैं | उपन्यास महाकाव्य की तरह विस्तीर्ण होता है | उपन्यास व्यक्ति-चरित्र तथा उससे संबंधित घटना के माध्यम से मानव चरित्र का चित्र उपस्थित करता है | उपन्यास पारंपारिक आख्यान से सर्वथा भिन्न

होता है जो जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करता है | इस प्रकार उपन्यास परंपरागत आख्यान से भिन्न आधुनिक गद्य साहित्य की महाकाव्य की तरह विस्तृत, जटिल एवं उद्देश्यपूर्ण वह महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें अतीत,वर्तमान या भविष्यत् वास्तविक अथवा काल्पनिक घटनाओं, क्रिया-व्यापारों तथा चरित्रों के माध्यम से मानवीय जीवन के सत्य का रोचक एवं सहज ढंग से उद्घाटन किया जाता है | इसके मूल में जितनी लोकरंजन की भावना है उतनी ही लोकमंगल की भावना भी है | उपन्यास साहित्य जीवन और जगत की प्रतिच्छाया है |

हिंदी के उपन्यासकार और उनके उपन्यास:-

प्रारंभिक उपन्यासकार :- (१८७७ से १९१८)

हिंदी उपन्यास का यह प्रारंभिक काल प्रयोगकाल था | प्रयोग के माध्यम से कोई भी साहित्य विधा अपनी उपयुक्त जमीन ढूँढने में प्रवृत्त होती है और सहज जमीन के मिलते ही उसके आंतरिक सौंदर्य का प्रस्फुटन होता है | प्रारंभिक उपन्यासकार के रूप में 'श्रध्दाराम फुल्लौरी' का नाम लिया जाता है | उन्होंने 'भाग्यवती' नामक सामाजिक उपन्यास लिखा था | यह अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास चाहे न हो लेकिन विषयवस्तु की नवीनता की दृष्टि से इसे हिंदी का प्रथम आधुनिक उपन्यास अवश्य कहा जा सकता है |'लाला श्रीनिवासदास' भी प्रारंभिक उपन्यासकार है जिन्होंने 'परीक्षागुरु' (१८८२ ई) नामक अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास लिखा | प्रारंभिक युग के उपन्यासकारों तथा उपन्यास को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है |

सामाजिक उपन्यासकार :-

इस काल में राष्ट्रीयता और सामाजिक जागृती की चेतना धीरे-धीरे विकसित होने लगी थी | सामाजिक जागरण का स्वर राजनीतिक जागरण के स्वर से कहीं ज़्यादा तीव्र और प्रेरणाप्रद था | उस काल के

चिंतकों और उपन्यासकारों को सामाजिक, धार्मिक रूढ़ियाँ और पाश्चात्य सभ्यता की अन्धी अनुकृतियाँ दोनों बुरी तरह सालने लगी थी | अत: इन्होंने सामाजिक, धार्मिक पक्ष की विकृतियों को अपने उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया है | सामाजिक उपन्यास लिखने वाले उपन्यासकारों में 'पं.श्रध्दाराम फुल्लौरी','लाला श्रीनिवासदास','बालकृष्ण भट्ट', 'किशोरीलाल गोस्वामी', 'गंगाप्रसाद गुप्त' उल्लेखनीय है | लाला श्रीनिवासदास का'परीक्षागुरु',बालकृष्ण भट्टजी का 'नूतन ब्रम्हचारी'तथा 'सौ अजान एक सुजान',भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का 'चंद्रप्रभा',किशोरीलाल गोस्वामी का'त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी','लीलावती वा आदर्शसती', 'राजकुमारी', 'माधवीमाधव', 'चपला या नव्य समाजचित्र',अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔंध का 'ठेठ हिंदी का ठाठ',बाबू राधाकृष्णदास का 'निस्सहाय हिंदू',राधाचरण गोस्वामी के 'विधवा विपत्ति',और 'कल्पलता' आदि उपन्यास उल्लेखनीय है |

इन उपन्यासों में उपन्यासकारों ने नारी विषयक समस्याएँ, चाटुकारिता, प्रियता,उसके दुष्परिणाम सदाचार और सदवृत्ति, शराबखोरी, हिंदुओं की असहायता को चित्रित किया है |

ऐतिहासिक उपन्यासकार :-

ऐतिहासिक उपन्यासकारों में 'किशोरीलाल गोस्वामी', 'मथुराप्रसाद शर्मा', 'गंगाप्रसाद गुप्त', 'लालजी सिंह', 'जैनेंद्र किशोर', 'मिश्रबंधू' आदि उपन्यासकार उल्लेखनीय है |

किशोरीलाल गोस्वामीजी ने 'हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी', 'लवंगलता', 'तारा', 'राजकुमारी', 'कनककुसुम वा मस्तानी', 'रजिया बेगम',मथुराप्रसाद शर्माजी ने'नूरजहाँ बेगम','गंगाप्रसाद गुप्तजी ने', 'नूरजहाँ', 'वीरपत्नी','कुमारसिंह','सेनापति हम्मीर', 'लालजीसिंह 'वीरबाला', जैनेंन्द्र किशोर ने 'गुलेनार' तो मिश्रबंधु ने 'वीरमणि', 'विक्रमादित्य','

पुष्पमित्रा’आदि ऐतिहासिक उपन्यास लिखे | इन उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखकर मानो अपनी सांस्कृतिक विरासत को पुनः जागृत करना चाहा है |

रोमांचक या घटनाप्रधान उपन्यास लिखने वाले उपन्यासकार :-

इस वर्ग में जासूसी,तिलस्मी,ऐयारी आदि से संबंधित उपन्यास आते हैं | जिनका लक्ष्य आश्चर्यपूर्ण घटनाओं एवं क्रियाकलापों के वर्णन द्वारा पाठकों को चकित एवं विस्मित कर देना है | इस वर्ग के उपन्यासकारों में ‘देवकीनंदन खत्री’, ‘गोपालराम गहरी’आदि उपन्यासकार उल्लेखनीय है | देवकीनंदन खत्रीजी ने ‘चंद्रकाता’, ‘चंद्रकान्ता संतति’, ‘भूतनाथ’,‘हरेकृष्ण जौहर ने ‘कुसुमलता’ गोपालराम गहरीजी ने, ‘अदभूत लाश’, ‘गुप्तचर’, ‘बेकसूर की फाँसी’, ‘खूनी कौन है’,‘बेगुनाह का खून’, ‘मायाविनी’, ‘भयंकर चोरी’ आदि रोमांचक उपन्यास लिखे |

अनूदित उपन्यासकार :-

इस युग में बंगला, अंग्रेजी, मराठी आदि उपन्यासों के अनुवाद भी बहुत बड़ी संख्या में प्रकाशित हुए, जिसमें ‘गदाधर सिंह’, ‘राधाकृष्णदास’,‘कार्तिकप्रसाद खत्री’, ‘ईश्वरी प्रसाद’, ‘रमेशचंद गुप्त’, ‘चण्डीचरण सेन’ आदि उपन्यासकारों ने विभिन्न उपन्यासों के अनुवाद प्रकाशित करवाये |

प्रेमचंद और प्रेमचंद युगीन उपन्यासकार :-

हिंदी साहित्य के उपन्यास का वास्तविक स्वरूप पहले-पहल प्रेमचंद के उपन्यासों में ही दिखाई पड़ता है या हिंदी उपन्यासों का वास्तविक विकास प्रेमचंद से ही मानना चाहिए | प्रेमचंद ने उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा दी | उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद का आगमन एक अद्वितीय घटना है; क्योंकि उस समय हिंदी उपन्यास अपने विकास की प्रारंभिक अवस्था में था | प्रेमचंद ने अपने पाठकों के

सामने एक विशाल और ठोस दृष्टिकोण रखा | उपन्यास में सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों पर खुलकर प्रकाश डाला | समाज के विभिन्न वर्गों का यथार्थ चित्र खींचा गया |

भारतीय किसान का जीवन उनकी कृति में मानो सहस्त्र जिह्वाओं से बोल उठा है | हर सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक, सांप्रदायिक समस्याओं एवं अनुभूतियों, भावनाओं का संघर्ष एवं अन्तर्द्वंद्व का प्रेमचंद ने विलक्षण अधिकार के साथ वर्णन किया है | प्रेमचंदजी ने 'प्रेमाश्रम', 'निर्मला', 'कायाकल्प','रंगभूमि','कर्मभूमि', 'गबन', 'गोदान' आदि उपन्यासों की रचना की |

प्रेमचंद युगीन उपन्यासकार :-

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में 'जयशंकर प्रसाद','जैनेंद्र कुमार','विश्वम्भरनाथ कौशिक','चतुरसेन शास्त्री 'वृंदावन लाल वर्मा', 'उपेंद्रनाथ अश्क','पांडेय बेचन शर्मा उग्र'आदि उल्लेखनीय है | जयशंकर प्रसादजी ने 'कंकाल','तितली', 'इरावती' नामक तीन उपन्यास लिखे | विश्वम्भरनाथ कौशिक ने 'माँ','भिखारिणी','चतुरसेन शास्त्री ने'व्यभिचार', 'हृदय की चाह','अमर अभिलाषा', 'आत्मदाह','वैशाली की नगरवधू','वय: रक्षाम',वृंदावनलाल वर्मा ने'गढकुंडार','झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'कचनार', 'मृगनयनी; 'अहिल्याबाई आदि ऐतिहासिक उपन्यास लिखे | पांडेय बेचन शर्मा उग्रजी के 'दिल्ली का दलाल','बुधुआ की बेटी; 'शराबी' उपन्यास उल्लेखनीय हैं |

प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यासकार :-

प्रेमचंद के बाद विश्व में और भारत वर्ष में सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक परिवर्तन हुए | सांप्रदायिक संघर्ष,स्वतंत्रता की प्राप्ति आदि कारणों से देश में विघटनकारी मूल्य और क्रांति का उन्मेष हुआ | इसका सामूहिक प्रभाव उपन्यासकारों की रचना, प्रेरणा पर भी पड़ा |

नारी स्वतंत्र,नारी जागरण, हिन्दू मुस्लिम एकता ने उपन्यासकारों की सृजनेच्छा को प्रभावित किया | इसी कारण सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आँचलिक, ऐतिहासिक आदि प्रकार के उपन्यास लिखे गये |

सामाजिक उपन्यासकार :-

प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यासकारों में 'उदयशंकर भट्ट', 'डॉ.रांगेय राघव', 'उपेंद्रनाथ', 'अश्क','प्रभाकर माचवे','राजेंद्र यादव', 'अमृतलाल नागर' इत्यादि का विशेष योगदान है | उदयशंकर भट्ट ने 'जो मैंने देखा',अमृतलाल नागर ने 'महाकाल', 'खंजन नयन', उपेंद्रनाथ अश्क ने 'सितारों का खेल',गिरती दीवारें' आदि उपन्यास लिखे | इन्होंने अपने उपन्यासों में अंधविश्वास, छूआछूत, अंधभक्ति,जाति-पाति, किसान के शोषण,चुनाव के दृश्य, नारी समस्याओं को अपनी बहुआयामी प्रवृत्तियों के साथ चित्रित किया |

मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार:-

प्रेमचंद के बाद उपन्यासों में सबसे प्रधान मौलिक प्रवृत्ति मनोविज्ञान की पायी जाती है | हिंदी जगत में मनोवैज्ञानिक उपन्यास का प्रारंभ 'जैनेंद्र कुमार' से माना जाता है | उन्होंने 'परख','सुनीता', 'त्यागपत्र','कल्याणी' यह मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखे | इलाचन्द जोशी के उपन्यासों में 'संन्यासी','पर्दे की रानी','प्रेत और छाया','निर्वासित', 'मुक्तिपथ', 'जहाज का पंछी' आदि उल्लेखनीय उपन्यास हैं |

अज्ञेयजी में मनोविश्लेषण की क्षमता अपूर्व है | हिंदी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को प्रौढ़ रूप देने का श्रेय अज्ञेयजी को ही है | अज्ञेयजी ने पात्रों के अंर्तसत्यों का यथार्थ विश्लेषण करने के लिए मनोविज्ञान की दृष्टि को स्वीकारा है,जीवन की अनुभूतियाँ जीवन से ही ली है,मनोविज्ञान की पोथियों से नहीं | अज्ञेयजी ने मनोविज्ञान के सिद्धातों को सिद्धांत बनाकर प्रस्तुत नहीं किया है, उनका आलोक लिया

है और उस आलोक में जीवन जीते हुए मनुष्य की अनुभूतियों, बोधों,मन:स्थितियों, चेतन-अवचेतन में स्थित सत्यों और उनके द्वंद्वो को गहराई से विवृत्त किया है | अज्ञेयजी के 'शेखर एक जीवनी','नदी के द्वीप' आदि मनोवैज्ञानिक उपन्यास है | भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा', तो निर्मल वर्मा का 'वे दिन' भी उल्लेखनीय उपन्यास हैं |

आँचलिक उपन्यासकार :-

अपने अपने अंचलों के जनजीवन को चित्रित करने के उद्देश्य से ही उपन्यासकार इस ओर प्रवृत्त हुए और आँचलिक उपन्यासों की रचना हुई | आँचलिक उपन्यासकार जनपद विशेष के जीवन के बीच जिया होता है या समीपी द्रष्टा होता है | वह विश्वास के साथ वहाँ के पात्रों, वहाँ की समस्याओं,वहाँ के संबंधों, वहाँ के प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के समग्र रूपों, परम्पराओं को अंकित करता है | हिंदी में फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जून, डॉ.रांगेय राघव आदि उपन्यासकारों ने आँचलिक उपन्यास लिखे |

आँचलिक उपन्यासकारों में फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल', 'परती परिकथा','जंगल के फूल','पानी के प्राचीर' तो 'नागार्जून' के 'बलचनमा','बाबा बटेसरनाथ','रतिनाथ की चाची','वरुण के बेटे', 'दुखमोचन' डॉ.रांगेय राघव के 'काका,''धरती मेरा घर','शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग वैतरणी' आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं |

ऐतिहासिक उपन्यासकार:-

प्रेमचंदोत्तर युग में ऐतिहासिक उपन्यास लिखने वाले उपन्यासकारो में वृंदावन लाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन,चतुरसेन शास्त्री, डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी, यशपाल का प्रमुख स्थान है | वृंदावन लाल वर्मा ने 'गढ़कुंडार', 'विराट की पदमिनी','झाँसी की रानी','मृगनयनी' आदि उच्चकोटि के ऐतिहासिक उपन्यास लिखे | राहुल सांकृत्यायन ने 'सिंह सेनापति',

'मधुर स्वप्न','विस्मृत यात्री' तो चतुरसेन शास्त्री ने 'वैशाली की नगरवधू','वयंरक्षाम:','सोमनाथ' यह तीन ऐतिहासिक उपन्यास लिखे | डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदीजी ने 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचंद्रलेख' और 'पुनर्नवा' आदि उपन्यासों की रचना की |

हिंदी कहानी:परिभाषा और स्वरूप :-

'कहानी' गद्य-साहित्य का एक प्रमुख साहित्य रूप है | आदिकाल से ही मनुष्य कहानियों में रूचि लेता रहा है | कहानी का स्वरूप कैसा भी रहा हो, पर मनुष्य जीवन के साथ साथ वह सदैव चलती रही है | जीवन स्वयं ही एक कहानी ही है | इस शब्द के अर्थ से यह स्पष्ट होता है कि कहानी कही जाती रही है | किन्तु आज कहानी लेखन की विधा है | प्राचीन आख्यान, महाभारत-रामायण की कथाएँ, जातक कथाएँ आदि कहानियों के प्राचीन रूप है | 'कहानी' शब्द का शाब्दिक अर्थ है-कहना | इस अर्थ के अनुसार 'जो कुछ भी कहा जाए, कहानी है' |

कहानी को एक निश्चित परिभाषा में बांधना कठिन है | फिर भी विद्वानों द्वारा कहानी के परिमाण देने का प्रयत्न हुआ है; जिससे कहानी को परिभाषित किया जा सके |

कहानी की परिभाषा :-

अज्ञेय :-

"कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है; शिक्षा है,जो उम्र भर मिलती है और समाप्त नहीं होती |"[१२]

प्रेमचंद:-

"कहानी एक रचना है,जिसमें जीवन के लिए एक अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है | उपन्यास की भाँति उसमें मानव-जीवन का संपूर्ण तथा बृहद रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता | न उसमें उपन्यास की भाँति सभी रसों का

सम्मिश्रण ही होता है | वह एक रमणीय उद्यान नहीं, जिसमे भाँति-भाँति के फूल-बेल-बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक कैसा गमला हैं जिसमें एक पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है |”[१३]

कहानी का स्वरूप :-

कहानी गद्य-साहित्य की आधुनिक युग में विकसित महत्त्वपूर्ण विधा है | आकार की संक्षिप्तता इसकी विशेषता है | किसी एक प्रभावी घटना के द्वारा इसका कथानक ग्रंथित होता है | कथानक का त्वरित विकास तथा त्वरित गति से चरमसीमा की ओर अग्रसर होना आवश्यक है | कहानी की रचना एक निश्चित प्रभाव अथवा लक्ष्य को ध्यान में रखकर की जाती है | उक्त निश्चित प्रभाव अथवा लक्ष्य के अनुसार ही कहानी का कथानक और चरित्र-चित्रण सीमित तथा नियंत्रित होता है | किसी-न-किसी मनोवैज्ञानिक सत्य की अभिव्यक्ति कहानी का लक्ष्य होता है | कहानी के कथानक में संघर्ष-तत्व या तनाव की भूमिका प्रमुख होती है | कहानी एक संक्षिप्त और सामान्य घटना या चरित्र के माध्यम से किसी न किसी जीवन सत्य की अभिव्यक्ति करती है |

कहानी आधुनिक युग में विकसित गद्य साहित्य की वह स्वतंत्र एवं स्वत:पूर्ण विधा है जिसमें लेखक अपने मन को प्रभावित करने वाली किसी घटना या चरित्र के माध्यम से किसी मनोवैज्ञानिक सत्य या यथार्थ जीवन की किसी विशिष्ट प्रवृत्ति का चित्रण करते हुए पाठकों के मन पर एक निश्चित प्रभाव उत्पन्न करने का लक्ष्य रखता है | कहानी जीवन का एक अंश है | वह मनोरंजक होने के साथ ही कहानीकार की स्वानुभूति तथा जीवन दृष्टि की भी अभिव्यंजना करती है |

हिंदी के प्रमुख कहानीकार :-

प्रारंभिक कहानीकार:

सन १९०० में 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन हुआ | कहानी के उद्भव और विकास में 'सरस्वती' पत्रिका का बड़ा योगदान है | अत:इसे हम कहानी के विकास का प्रारंभिक बिन्दु मान सकते है |

आरंभिक हिंदी कहानी लेखकों में 'किशोरीलाल गोस्वामी', 'माधवप्रसाद मिश्र', 'बंगमहिला', 'रामचंद्र शुक्ल', 'जयशंकर प्रसाद','चंद्रधर शर्मा गुलेरी', 'वृंदावन लाल वर्मा ,गिरिजाकुमार घोष प्रभृति की गणना कर सकते हैं | किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदूमती' कहानी 'सरस्वती' में १९०० ई.में प्रकाशित हुई | यह शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' नाटक के आधार पर लिखी गयी है | इसी वर्ष 'सुदर्शन' में माधवप्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता' कहानी प्रकाशित हुई | १९०२ में 'सरस्वती' में भगवानदीन बी.ए.की 'प्लेग की चुडैल' कहानी प्रकाशित हुई |

रामचंद शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', बंगमहिला की 'दुलाईवाली' (१९०७), वृंदावन लाल वर्मा की 'राखीबंद भाई', जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम', चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था', 'विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक की 'रक्षाबंधन' आदि कहानियाँ प्रकाशित हुई |

उपर्युक्त कहानीकारों के लेखन से साहित्य में कहानी की स्वतंत्र्य सत्ता मान्य हुई और उसका मौलिक रूप निखारा | सन १९०० के लगभग हिंदी कहानी का जन्म हुआ और १९१२ से १९१८ ई.के बीच वह पूर्णत: प्रतिष्ठित हो गई |

प्रेमचंद युग :- (सन् १९१८-१९३६)

जिस प्रकार प्रेमचंद उपन्यास-साहित्य के एकच्छत्र सम्राट बने रहे | उसी प्रकार कहानी के क्षेत्र में भी उनका स्थान अद्वितीय रहा | इस अवधि में उन्होंने लगभग दौ सौ कहानियाँ लिखी | प्रेमचंद की

कहानियाँ अपने आसपास की जिंदगी से जुड़ी हुई है | वे ग्रामीण जीवन से अधिक संबद्ध थे,अत:उनकी अधिकतर कहानियों का विषय गाँव की जिंदगी से नि:सृत है | उनकी कहानियों में हम एक अत्यंत प्रबुद्ध कलाकार को कहानी के सही ढाँचे या शिल्प की तलाश में संघर्षरत पाते हैं | प्रेमचंदजी ने 'बलिदान', 'आत्माराम','बूढी काकी' 'हार की जीत', 'शतरंज के खिलाड़ी','विचित्र होली','पूस की रात','ईदगाह','कफ़न','तनाव' आदि कहानियाँ लिखकर कहानी के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है |

"मानवीय संवेदना प्रेमचंद की कहानी का प्राणतत्व है | प्रेमचंद जी ने जो तीन सौ के लगभग कहानियाँ लिखी हैं,उनमें हमें वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र मिलते हैं,क्योंकि प्रेमचंद जी अपने कथा साहित्य के पात्र पुस्तकों से न लेकर इस दृश्यमान जगत से लेते हैं | समाज के कटु यथार्थ को निरुपित करने वाली उनकी जो कहानियाँ हैं उनमें मानव चरित्र का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक निरीक्षण मिलता है |....प्रेमचंद जी ने अपनी सभी कहानियों में मानवीय दर्द को उभारने का प्रयत्न किया है | कला की दृष्टि से प्रेमचंद जी की कहानियाँ मोपांसां के करीब पड़ती हैं |"[१४]

प्रेमचंद युगीन कहानीकार :

प्रेमचंद युग में प्रेमचंद के साथ साथ 'जयशंकर प्रसाद', 'विश्वंभरनाथ कौशिक','सुदर्शन',पाण्डेय बेचन शर्मा','उग्र','सियारामशरण गुप्त','भगवती प्रसाद बाजपेयी','वृंदावन लाल वर्मा','सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला','भगवती प्रसाद वर्मा प्रभृति की गणना की जाती है |

प्रेमचंद युग के दूसरे प्रमुख कहानीकार है,'जयशंकर प्रसाद' | यद्यपि उनकी पहली कहानी 'ग्राम' सन १९११ में ही 'इंदु' में छप चुकी थी,तथापि उनके महत्त्वपूर्ण कहानी-संग्रह'प्रतिध्वनि' (१९२६),'आकाशदीप

(१९२९), 'आँधी (१९३१), 'इंद्रजाल' (१९३६) भी प्रकाश में आये | प्रसाद की कहानियों में जीवन के सामान्य यथार्थ को कम और स्वर्णिम अतीत के गौरव,मसृण भावुकता,कल्पना की ऊंची उड़ान तथा काव्यात्मक चित्रण को अधिक महत्व मिला है |

'कौशिक' जी की 'गल्पमंदिर', 'चित्रशाला', 'प्रेम-प्रतिमा', 'मणिमाला', 'कल्लोल', तो 'सुदर्शन' की 'सुदर्शन सुधा','सुदर्शन-सुमन','तीर्थयात्रा', 'पुष्पलता', 'गल्पमंजरी', 'परिवर्तन' आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं |

प्रेमचंदोत्तर युग के कहानीकार:-

प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी को नवीन आयाम देने वाले कहानीकार में प्रमुख है 'जैनेंद्र कुमार' | उन्होंने कहानी को 'घटना के स्तर से उठा कर चरित्र' और 'मनोवैज्ञानिक सत्य' पर लाने का प्रयास किया | उनकी 'हत्या','अपना-अपना भाग्य','बाहुबली','वातायन','नीलम देश की राजकन्या','दो चिड़िया','ध्रुवयात्रा','एक दिन','पाजेब'आदि कहानियों में व्यक्ति के मन की शंकाओं,प्रश्नों तथा गुत्थियों का अंकन किया है | 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' भी इस कालखंड के प्रमुख कथाकार है | उनकी प्रारंभिक कहानियों में विप्लव और विस्फोटक की भावना है | अज्ञेयजी ने 'विपथगा','अमरवल्लरी', 'कोठरी की बात', 'शरणार्थी', 'हरसिंगार', 'जयदोल', 'रोज', 'मेजर चौधरी की वापसी', 'शत्रु' आदि कहानियाँ लिखी |

इस युग में 'यशपाल', 'अमृतराय', 'भैरवप्रसाद गुप्त', 'मन्मथराय गुप्त','अन्नपूर्णानंद','जी.पी.श्रीवास्तव','कमलाकांत वर्मा'आदि कहानीकारों का कहानी लेखन के क्षेत्र में बड़ा योगदान रहा है |

स्वातंत्र्योत्तर काल:-(सन१९४७ से वर्तमान तक):-

सन १९४७ में हमारा देश अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त हुआ | इस राजनीतिक स्वतंत्रता ने हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक,

आर्थिक,शैक्षिक प्रवृत्तियों के विभिन्न आयामों को प्रभावित किया | समग्र देश का वातावरण सामाजिक,राजनीतिक हलचलों,उमंग और उल्लास और साथ ही विभाजन की विभीषिका के कारण गहरी विषाद की परतों में डूब गया |

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत बढ़ती हुई महँगाई, बेकारी,भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति ने जनमानस को विक्षुब्ध तो किया परन्तु स्वदेशी शासन के प्रति विश्वास बना रहा | इन्हीं परिस्थितियों ने कहानीकार को नयी कहानी के लिए प्रेरित किया | स्वतंत्रता के बाद जो अनेक आंदोलन हुए उनके तहत नयी कहानी,सचेतन कहानी,अकहानी,समानान्तर कहानी, साठोत्तरी कहानी,समकालीन कहानी जैसे कई नाम सामने आये,परन्तु इनमें से केवल दो मोड़ो को विशेषत: लक्षित किया जा सकता है | ये दो मोड़ हैं - नयी कहानी और समकालीन कहानी |

नयी कहानी के कहानीकार:-

नयी कहानी के कहानीकारों में कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, अमरकांत, विष्णु प्रभाकर आदि कहानीकारों की गणना की जाती हैं | कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया','कस्बे का आदमी','खोई हुई दिशाएँ', 'माँस का दरिया', मोहन राकेश की 'नये बादल', 'जानवर और जानवर', 'फौलाद का आकाश' राजेन्द्र यादव की 'देवताओं की मूर्तियाँ', 'खेल खिलौने','जहाँ लक्ष्मी कैद है','अभिमन्यू की आत्महत्या', 'छोटे-छोटे ताजमहल','शहर के बीच एक वृक्ष','किनारे से किनारे तक', 'अमरकांत की डिप्टीकलक्टरी' विष्णु प्रभाकर की 'धरती घूम रही है' आदि कहानियाँ प्रमुख हैं | नयी कहानी के कहानीकारों में शिवप्रसाद सिंह,निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी, अमृत राय,मार्कंडेय आदि कहानीकारों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है |

नयी कहानी के कहानीकारों ने जो कहानियाँ लिखी उन कहानियों की "कथ्यगत प्रवृत्ति में यथार्थ के प्रति एक नया रुख,दाम्पत्यगत दूरियों की ईमानदार स्वीकृति,नारी-पुरुष के काम-संबंधों का स्वीकार, महानगरीय जीवन बोध, मूल्यों और मान्यताओं का परिवर्तन,पुराने मूल्यों के सामने विद्रोहात्मक मुद्रा, विदेशों से आयातित मार्क्सवाद-अस्तित्ववाद प्रभृति दर्शनों का प्रभाव, वैयक्तिक चेतना का प्राबल्य, वैज्ञानिकीकरण,औद्योगीकरण, नगरीकरण आदि का प्रभाव,जीवन के प्रत्येक स्तर पर रोमानी-बोध से मुक्ति आदि अभिलक्षणों को रेखांकित किया गया है |"[१५]

समकालीन कहानीकार:-

सन्.१९६२-६५ ई.तक आते-आते शनै: शनै: नयी कहानी भी रूढ़िगत मुद्रा को धारण करने लगती है और कहानी को पुनः एक नये मुहावरे की तलाश में निकलना पड़ता है | इस स्थिति के रहते अनेक नये आंदोलन जन्म लेते हैं | इन कहानी - आंदोलनों में जगदीश चतुर्वेदी का 'अकहानी आंदोलन',अमृतराय का 'सहज कहानी आंदोलन',महीप सिंह द्वारा प्रस्थापित 'सचेतन कहानी' आंदोलन, गंगाप्रसाद विमल द्वारा प्रबोधित' समकालीन कहानी आंदोलन' आदि मुख्य है |

"वस्तुत: ये सारे आंदोलन कहानी में कुछ नया कर गुजरने की मंशा से अग्रसरित हुए हैं | अत:कहानी-साहित्य के अधिकांश आलोचकों ने अपनी सुविधा के लिए 'समकालीन हिंदी कहानी' संज्ञा को अंगीकृत कर लिया है | इस प्रकार समकालीन कहानी को हम नयी कहानी का अगला मोड़ और कालगत विभावना की दृष्टि से अत्याधुनिक कहानी का वर्तमान चरण कह सकते हैं | परिणाम एवं

गुणात्मकता उभय दृष्टि से समकालीन कहानी ने हिंदी कथा-साहित्य को एक विशिष्ट समृद्धि प्रदान की है |"[१६]

समकालीन कहानीकारों में ज्ञानरंजन की 'एक और अनुभव', 'फेंस के इधर और उधर','शेष होते हुए','सपना' गंगाप्रसाद विमल की 'प्रश्नचिन्ह','एक और विदाई',दूधनाथ सिंह की गुप्त दान','इंतजार', 'सपाट चेहरे वाला आदमी','प्रतिशोध' रवीन्द्र कालिया की 'कहानी अधूरी ही है' आदि कहानियाँ प्रकाशित हुई | समकालीन कहानीकारों में राजकमल चौधरी, ममता कालिया, काशीनाथ सिंह, महेंद्र भल्ला, इब्राहिम शरीफ, कृष्ण अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल,मृदुला गर्ग, राजेन्द्र अवस्थी, गिरिराज किशोर, गोविन्द मिश्र, शैलेश मटियानी, धर्मेन्द्र गुप्त, नरेंद्र कोहली, मुद्राराक्षस, पृथ्वीराज मोंगा, मधुकर सिंह, राकेश वत्स, रमेशचन्द्र शाह, हिमांशु जोशी प्रभृति कहानीकारों के नाम सुविधापूर्वक लिए जा सकते हैं |

"समकालीन कहानी अपने समग्र रूप में बहुआयामी होती जा रही है | जीवन की कोई भी समस्या और कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं रहा है | जीवन की विषम आर्थिक एवं मानसिक परिस्थितियाँ, वैज्ञानीकरण, औद्योगीकरण तकनीकी विकास और उससे उत्पन्न नवीन स्थितियाँ-परिस्थितियाँ,मूल्यगत संकट एवं संक्रमण, नैतिक मान्यताओं तथा क्रोध, महानगरीय तथा औद्योगिक बस्तियों की समस्याएँ, भ्रष्ट सामाजिक-राजनीतिक धार्मिक व्यवस्थाएँ,प्रेम तथा सेक्स का नूतन भावबोध, अर्थतंत्र का बढ़ता दबाव,खंडित-दरकते पारिवारिक सम्बन्ध, नौकरीपेशा नारी की समाज में बदलती हुई स्थिति,नारी में आधुनिकता का तथा पुरातनता का द्वन्द्व, देश के राजनीतिक परिवेश और उसमें व्याप्त भष्टाचार का सांगोपांग चित्रण,युवा आक्रोश,शिक्षा में बढ़ता भष्टाचार, छात्र-अनुशासन-हीनता,शिक्षित बेरोजगारी,प्रतिभाओं की दारुण

अवमानना, नौकरशाहों का दबाव जैसी विविधवर्णी समस्याओं को लेकर यह कहानी अग्रसरित हो रही है |"[१७]

उपन्यास और कहानी में अंतर :-

कहानी और उपन्यास विधाओं में पर्याप्त अंतर है | वस्तुत: इन दोनों साहित्यिक विधाओं के मूल तत्व समान ही है | दोनों की मूल प्रेरक शक्ति भी एक है फिर भी दोनों में पार्थक्य स्पष्ट है | श्री.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने 'नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति में' दोनों में भेद को व्यक्त करते हुए लिखा है कि "कहानी रेल कि पटरी पर दौडती है,किन्तु उपन्यास विस्तृत मैदान में दौडता है |"[१८]उपन्यास की कथा दीर्घ होती है, सहायक कथाओं के सहारे ही उपन्यास विस्तार पाता है | कहानी का कथानक संक्षिप्त होता है, उसे केवल एक बैठक में पढ़ा जा सकता है | उपन्यास में पात्रों की संख्या कुछ अधिक होती है | तो कहानी में पात्रों की संख्या कम से कम होती है | किन्तु दोनों में कथानक की प्रधानता होती है |

उपन्यास में जीवन के व्यापक अंगों पर प्रकाश डाला जाता है और कहानी में जीवन के एक अंग की झाँकी रहती है | उपन्यास में संवाद लंबे होते हैं, तो कहानी में संवाद संक्षिप्त होते हैं | उपन्यास का उद्देश्य व्यापक तथा बहुसूत्रीय होता है,जबकि कहानी का उद्देश्य निश्चित,सीमित और एकसूत्रीय होता है | उपन्यासकार की गति शिथिल होती है | जबकि कहानीकार वायुयान की गति से अपने लक्ष्य की ओर सीधा दौड़ता है | वस्तुत:दोनों की प्रवृत्ति,प्रकृति और प्रक्रिया में अंतर है | वृषभ चारों पैरों पर समान बल देते हुए चलता है, जब कि मेंढक फुदक-फुदक कर चलता है | ठीक यहीं बात उपन्यास और कहानी में लागू होती है | उपन्यासकार मंथर गति से आगे बढ़ता है,जबकि कहानीकार बीच-बीच में बहुत सी जमीन छोड़ते हुए चलता है | जिस

प्रकार मेढ़क और वृषभ के संगठन और गतिक्रम में भेद है | उसी प्रकार कहानी और उपन्यास में भेद है |

यदि आधुनिक उपकरणों से तुलना करें तो उपन्यास की तुलना हम किसी 'वीडियो-कैसेट' से कर सकते है, तो कहानी की तुलना 'स्नेपशोट' से | उपन्यास और कहानी दोनों में जीवन और जगत की उन समस्याओं को केंद्रस्थ किया गया है जिनका सरोकार मानवीय जीवन और मानवीय जीवन मूल्यों से हैं | फर्क सिर्फ इतना है कि उपन्यास में जीवन और जगत की अनेक घटनाएँ, समस्याएँ रहती हैं; वहाँ कहानी जीवन के किसी मार्मिक प्रसंग को लेकर चलती है |

आधुनिक हिंदी साहित्य पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव :-

हिंदी साहित्य में विभिन्न विचारधाराएँ प्रवाहमान है | हर विचाराधारा के अपने निश्चित सिद्धांत होते है | हर विचारधारा अपने आप में महत्त्वपूर्ण होती है,वह इसलिए अपने समय एवं प्रकृति के अनुरूप होती | साहित्य की कोई भी विधा क्यों न हो, वह कोई-न-कोई विचार समाज के सामने अवश्य प्रस्तुत करती है | रचनाकार जिस विचारधारा से प्रभावित होता है, उसकी रचना में उन्हीं विचारधाराओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है | आधुनिक हिंदी साहित्य एंव साहित्यकारों पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है-जैसे

अस्तित्ववादी विचारधारा
मनोविश्लेषणवादी विचारधारा
मार्क्सवादी विचारधारा
यथार्थवादी विचारधारा
मानवतावादी विचारधारा |

अस्तित्ववादी विचारधारा:-

'अस्तित्व'शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Existence'शब्द का पर्यायवाची है | कोष के अनुसार अस्तित्व का अर्थ- "जीवित रहने की वह पद्धति जो अन्य वस्तुओं के साथ समायोजन में निहित है |"[१९]युद्धों की विभीषिकाओं से अस्तित्ववादी चिंतन सामने आया जिसके प्रणेता कीर्केगार्ड थे लेकिन सार्त्र ने इस चिंतन का विकास कर इसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की |

'अस्तित्व' दर्शन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए जैस्पर्स ने लिखा है, "अस्तित्व का दर्शन वह चिंतन पद्धति है जो समस्त भौतिक ज्ञान का उपयोग करती है और उसका अतिक्रमण करती है ताकि मनुष्य पुन:आत्मस्वरूप को प्राप्त कर सके |"[२०]सार्त्र की धारणा में मृत्यु व्यक्ति के अस्तित्व के लिए एक मात्र चुनौती है जो व्यक्ति के होने के सदा के लिए नकार देती है | इसलिए सार्त्र कहता है कि-"हमें बिना आशा के काम करना चाहिए' | वह आशा को एक झूठा मूल्य मानता है, वह संघर्ष को ही अंतिम सत्य मानता है क्योंकि संघर्ष ही व्यक्ति के अस्तित्व को प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करता है | वह समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक मूल्यवान मानता है | क्योंकि व्यक्ति होते हुए भी नहीं है जबकि समाज न होते हुए भी है |"[२१]

स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व और पश्चात् उत्पन्न हत्याएँ, बेकारी, लूटपाट औद्योगिकीकरण, भाषा की समस्या, अर्थव्यवस्था की पूँजीवादी विकृति आदि स्थितियाँ थी जिनके कारण अस्तित्ववाद भारतीय साहित्य में प्रवेश करने में सफल रहा | डॉ.नगेंद्र के अनुसार-"इस विचारधारा का आयात भारत में गत दस -पन्द्रह वर्षों से हो रहा है और

अपने देश की बिगड़ती हुई राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक परिस्थितियों ने इसके प्रचार में योगदान किया है |"[२२]पारिवारिक विघटन, पश्चिमीकरण का प्रभाव, महानगरीकरण,उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव आदि ऐसी परिस्थितियाँ थी जिसके कारण व्यक्ति अकेलेपन, संत्रास, पीड़ा, कुण्ठा अवसाद का शिकार हो गया | उसकी यह पीड़ा अनुभव करने से ही समझी जा सकती है | अस्तित्ववादी चिंतन ने मानव को इस नियति से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया |

आधुनिक हिंदी साहित्य के कथाकारों ने अस्तित्ववादी दर्शन को आत्मसात करके जीवन की सापेक्षता में रखकर अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है | हिंदी साहित्य पर इस विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है | अस्तित्ववाद स्वतंत्रता का पक्षधर है फलस्वरूप मनुष्य अपनी इस स्वातंत्र्य भावना के बल पर अपने अस्तित्व व व्यक्तिगत निर्माण व विकास के मार्ग को अवरुद्ध करने वाले मूल्यों को ठुकरा सकता है | दूसरे शब्दों में 'विवाह की स्वतंत्रता, कार्य की स्वतंत्रता और संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास की स्वतंत्रता ही व्यक्ति-स्वातंत्र्य है |'

राजेंद्र यादव की कहानी 'अंगारों का खेल' की नायिका व्यक्ति-स्वातंत्र्य को उजागर करती हुई कहती है-"जब हम अपने विषय में विचारने में स्वतंत्र्य नहीं है तो किस बात में ? अब हम लोग समझदार हो गये हैं | आखिर भविष्य हमारा है ? क्यों नहीं हमें समय दिया जाता है कि हम उसे समझे उसका सदुपयोग करें ? हमें अपनी चीज पर अधिकार है | उसे नष्ट करना-चाहे नष्टकर्ता कोई हो, हम सहन नहीं कर सकते |"[२३]

भीष्म साहनी, ज्ञानरंजन, ममता कालिया, काशीनाथ सिंह, मंजुला भगत, गिरिराज किशोर इनके साहित्य में व्यक्ति की अस्तित्व

के प्रति चिंता, स्वतंत्रता की छटपटाहट दिखाई देती है |

मनोविश्लेषणवादी विचारधारा :-

मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक मौलिक विचारक और मनोविश्लेषण के आविष्कारक के रूप में सिग्मंड फ्रायड का नाम उल्लेखनीय है | फ्रायड ने अचेतन मस्तिक, कामेच्छा (लिबिडो) व ग्रंथियों के आधार पर मनोवैज्ञानिक पद्धति का विकास किया | उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के सचेतन मन के भीतर कहीं गहरे एक अचेतन मन होता है जिसमें व्यक्ति के भाव, अनैतिक, अधार्मिक तथा असामाजिक इच्छाएँ तथा व्यवहार आते हैं | जिन्हें व्यक्ति का सचेतन मन ऊपर आने से रोक देता है |

फ्रायड के अनुसार मानव मस्तिष्क तथा उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को संचालित करनेवाली शक्ति लिबिडो है | यह शक्तिशाली है किन्तु इसकी अभिव्यक्ति पर चेतना हमेशा नियंत्रण रखती है | इसके क्षेत्र में नर-नारी के लैंगिक आकर्षण ही नहीं अपितु वात्सल्य, स्नेह व सहानुभूति आदि भाव भी आ जाते है | फ्रायड के अनुसार मानव मस्तिष्क तथा उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को संचालित करनेवाली शक्ति लिबिडो है | व्यक्ति मानव का समस्त जीवन इसी कामेच्छा की तृप्ति में लगा रहता है,परंतु सामाजिक रीति-रिवाज, नियम, परंपराएँ, पारिवारिक परिवेश उसकी इच्छा में बाधा पहुँचाते है | यदि व्यक्ति इन बाधाओं से विचलित हुए बिना आगे बढ़ता रहता है तो उसका व्यक्तित्व सहज व सरल होता है लेकिन वह अशक्त हो तो उसमें अस्वाभाविकता व कुण्ठाएँ जन्म लेने लगती है और उसका विकास

विकृत हो जाता है | फ्रायड कामवासना की अतृप्ति को व्यक्ति की सभी समस्याओं का मूल कारण स्वीकार करते हैं |

आधुनिक हिंदी साहित्य पर मनोविश्लेषणवाद की गहरी छाप दिखायी देती है | इस विचारधारा ने हिंदी साहित्यकारों को काफी प्रभावित किया | जैनेंद्र कुमार, इलाचन्द जोशी, अज्ञेय आदि ने मनोविश्लेषण पद्धति से प्रेरणा ग्रहण की है | अज्ञेय का उपन्यास 'शेखर','एक जीवन' सेक्स की समस्या और उससे उत्पन्न कुण्ठा का वर्णन करता है |

कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, जगदीश चतुर्वेदी, कृष्ण बलदेव वैद, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव आदि साहित्यकारों ने भी मनोविश्लेषणवादी विचारधारा से प्रभावित होकर आपसी संबंधों में यौन प्रवृत्ति को प्रमुखता दी | इन्होंने सेक्स को जैविक आवश्यकता माना तथा विवाहेत्तर प्रेम व यौन-संबंधों का भी समर्थन किया |

मार्क्सवादी विचारधारा :-

कार्ल मार्क्स ने जिस नवीन दृष्टि का विकास किया वह 'मार्क्सवाद' के नाम से जानी जाती है | यह विचारधारा पश्चिमी जगत में औद्योगिकीकरण से उत्पन्न सामाजिक विषमता,पूँजीवाद के उत्तरोत्तर विकास के फलस्वरूप श्रमिक जनों के दयनीय एवं दलित जीवन का परिणाम है जिससे प्रेरित होकर मार्क्स ने नवीन विचार प्रस्तुत किये | मनोविश्लेषणवादी विचारधारा ने जहाँ मनुष्य के मन, अवचेतन आदि का अध्ययन किया है वहीं दूसरी ओर मार्क्सवाद ने उसके मानसिक एवं भौतिक जीवन के लिए नवीन मानदण्ड प्रस्तुत किये |

औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप आर्थिक जगत में जो वर्ग विषमता उत्पन्न हुई उसकी व्याख्या करते हुए मार्क्स कहते हैं-"पूँजीवाद

ही हमारी इस निम्नतर एवं शोचनीय स्थिति का कारण है | पूँजीपतियों ने हमारा हर प्रकार से शोषण किया है | वह अपना लाभ-ही-लाभ देखता है और अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के लिए वह समस्त भूमंडल पर छाता जा रहा है |"[२४] कार्ल मार्क्स ने कहा जब तक वर्ग भेद रहेगा वर्ग संघर्ष अनिवार्य है | श्रमिक वर्ग की दयनीय स्थिति तभी समाप्त हो सकती है जब अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा परिवर्तन हो पूँजीवादी वर्ग समाप्त हो और दलित वर्ग प्रतिष्ठित हो | मार्क्सवादी विचारधारा धर्म तथा ईश्वर को अस्वीकार करती हुई यह प्रतिपादित करती है कि धर्म व ईश्वर मनुष्य के लिए न लाभकारी हैं और न ही आवश्यक तथा मनुष्य अपनी समस्याओं के समाधान में स्वयं ही समर्थ है | मार्क्सवादी विचारधारा के कारण ही शोषित वर्ग में शोषक वर्ग के प्रति विरोध की भावना पनपी |

आधुनिक हिंदी साहित्यकारों को मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरणा और उत्साह मिला,जिसके परिणाम स्वरूप आधुनिक हिंदी साहित्य में इस विचारधारा को स्थान मिला | हिंदी साहित्यकार मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हुए | मार्क्सवादी धारा को ही हिंदी साहित्य में 'प्रगतिवाद' कहा जाता है | हिंदी साहित्य में प्रगतिशील साहित्य वह है जिसके अन्तर्गत न केवल निम्नवर्ग के शोषण का चित्रण है,अपितु उच्चवर्ग के साथ उनका संघर्ष,अन्तर्विरोध तथा अन्य गतिविधियों का भी चित्रण किया गया है |

मार्क्सवादी विचारधारा की गहरी छाप 'यशपाल' जी के साहित्य में दिखायी देती है | वे मार्क्सवादी चिंतक थे | राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, काशीनाथ सिंह आदि अनेक साहित्यकारों ने इस विचारधारा से प्रभावित होकर कहानी तथा उपन्यास की रचना की है |

यथार्थवादी विचारधारा :-

'यथार्थवाद'शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है-'यथा' और 'अर्थ' जिसका अर्थ होता है,'जो वस्तु जैसी भी है उसे उसी रूप में चित्रित करना' | दर्शन मनोविज्ञान,कला एवं साहित्य के क्षेत्र में वह विशेष दृष्टिकोण जो सूक्ष्म की अपेक्षा स्थूल को,काल्पनिक की अपेक्षा वास्तविक को, भविष्य की अपेक्षा वर्तमान को, सुंदर के स्थान पर कुरूप को, आदर्श के स्थान पर यथार्थ को ग्रहण करता है, वह यथार्थवादी विचारधारा कहलाती है |

यथार्थवाद का दार्शनिक स्वरूप दो बिंदुओं पर आधारित है- "आदर्शवाद का विरोध व इंद्रिय प्रत्यक्षीकरण के रूप में प्रतिरूपवाद इसका ही एक अनिवार्य अंग है | मनुष्य के जीवन के दुःख और वेदना का इस दर्शन में स्थान होने के कारण यह एक संवेदनशील दर्शन भी बन गया है |"[२५] यथार्थवाद जीवन की सफल अभिव्यक्ति है |

अस्तित्ववादी विचारधारा की तरह यह भी पाश्चात्य विचारधारा की ही देन है | युनान के 'एनैक्सिमैण्डर और 'एनैक्सिमिनिज' जैसे विद्वान प्रमुख रूप से इस दर्शन के प्रवर्तक माने जाते हैं | यह दर्शन कल्पना विलास से दूर रहने के कारण 'इंद्रिय प्रत्यक्षीकरण' ही इसका आधार माना जाता है | प्रस्तुत विचारधारा, संसार में जो कुछ है, यथावत उसी को मानकर चलती है | परिणाम स्वरूप आदर्शवाद से वह दूर हो जाता है तथा भौतिक और सांसारिक बातों से चेतना और अनुभूति के संदर्भ में 'अस्तित्ववाद' के साथ चलता है | मनुष्य जीवन के दुःख और वेदना का इस दर्शन में प्रमुख स्थान होने के कारण यह एक संवेदनशील दर्शन बन गया है | 'यथार्थवाद' सत्य का अन्वेषक, पक्षधर एवं प्रचारक होने के कारण विद्रोही तथा प्रसंगवश बीभत्सता का रूप धारण कर लेता है |

आधुनिक हिंदी साहित्य में इस विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित है | प्रेमचंद,फणीश्वरनाथ रेणु,भीष्म साहनी आदि साहित्यकार यथार्थवादी थे | आज उदयप्रकाश अखिलेश, सुभाष शर्मा, अब्दुल बिस्मिल्लाह आदि कहानीकारों के कहानियों में यथार्थवाद के दर्शन होते है | उच्चवर्ग से निम्नवर्ग पर होता अन्याय,अपने ही परिवार,अपने ही बच्चों द्वारा बूढ़े-माँ बाप का तिरस्कृत किया जाना यह आज के समाज का यथार्थ है | साहित्यकारों ने उसका विदारक चित्रण किया है |

मानवतावादी विचारधारा :-

मानवतावादी विचारधारा 'जनवादी' विचारधारा भी कही जाती है | प्रस्तुत विचारधारा का क्षेत्र व्यापक है | मानवतावादी विचारधारा ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना और "मानवोपरि सत्ता में आस्था और अपर जीवन की कामना के लिए धर्म का निषेध किया |"[२६] आधुनिक युग के मनुष्य पर मानवतावाद ने निर्णायक प्रभाव डाला | मानवतावाद जीवन के प्रति एक समान दृष्टि देता है, अमानवीयता के विरुद्ध एक आक्रामक शस्त्र का काम करता है, विश्व के प्रति एक संदर्शन के निर्माण और अभिग्रहण की ओर प्रवृत्त करता है और मनुष्य के सारे सांस्कृतिक क्रियाकलाप को प्रभावित करता है | ☒

मानवतावादी चिंतक यह मानते हैं कि-"मनुष्य में जो पाशविक है और जो दिव्य है उन दोनों के मध्य में कुछ ऐसा है जो पूर्णतः मानवीय है और उसी को नैतिकता, कला, सौंदर्यबोध तथा अन्य आचार-विचार का प्रतिमान मानना चाहिए |"[२७] मानवतावादी चिंता का केंद्रीय विषय मनुष्य का सुख है | इस विचारधारा के पीछे अतीत के विशाल मनुष्योन्मुख चिंतन का बल है | मानवतावादी चिंतकों व रचनाकारों की सृजन दृष्टि के पीछे "मानवीय कल्याण और सुख का लक्ष्य लेकर चलने वाली युगों की सर्जना महज प्रेरणा है | वह सारा

पिछला साहित्य जिसका लक्ष्य मनुष्य स्वयं है या जिसमें उसका सामर्थ्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित है और जो उसकी सर्जनात्मक उपलब्धि से संबंधित है, मानवतावादी अवधानता का विषय है |”[२८]

आधुनिक हिंदी साहित्य में मानवतावादी विचारधारा का प्रभाव गिरिराज किशोर, जगदीश चंद्र जैसे साहित्यकारों के कथा साहित्य में परिलक्षित होता है | मानवतावादी विचारधारा का मुख्य उद्देश्य मानव को सर्वोपरि सिद्ध करना है |

राजी सेठ की अपनी विचारधारा :-

आधुनिक हिंदी साहित्य तथा साहित्यकारों पर अस्तित्ववादी, मनोविश्लेषणवादी, मार्क्सवादी, तथा यथार्थवादी और मानवतावादी विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित होता है | परंतु राजी सेठ इन विविध विचारधाराओं के प्रभाव से मुक्त है | राजी सेठ का स्वयं का मानना है कि साहित्य में उनका आना किसी विचारधारा द्वारा धकियाया हुआ नहीं है | उनकी कथा यथार्थ मानवीय यथार्थ की तरह हमें प्रभावित तो करते हैं लेकिन राजीजी उसके लिए किसी जनवादी या प्रगतिवादी धारा के बहाने में नहीं जाती बल्कि अपने यथार्थ से मनुष्य का संसार उनकी अपनी-अपनी मानवीय स्थितियों के साथ उद्‌घाटित करती है |

राजी सेठ अपने हर पात्र में अपना विचार रखती है जिससे वह परिचालित होता है, न किसी विचारधारा से उत्पन्न ऐसा पात्र जो जीवन तों जिये अपने लिये, संघर्ष भी अपने लिए करे और माने यह कि ऐसा वह किसी बाहरी विचार के अधीन कर रहा है जो उसका अपना न हो | राजी सेठ के मतानुसार-“साहित्य सर्जक स्वतंत्रचेता होते हैं और विचारधारा की प्रतिबद्धता साहित्य के लिए बंधन हो जाती है- एक प्रकार का आरोपण अथवा हस्तक्षेप-जिसके चलते लेखन को अपने स्वत्व और विचारों का खुला अन्वेषण करने की छूट नहीं मिलती | वह

किन्हीं सीमित विचारों को व्यक्त करने (या न करने) की बाध्यता में बंधा रहता है | वैसे भी साहित्य सृजन अनवरत बहने वाली स्त्रोतस्विनी है, जबकि विचारधारा एक प्रकार का वैचारिक ठहराव | समाज व समय की परिवर्तनधर्मी प्रकृति के कारण विकसनशीलता के समक्ष कोई भी विचारधारा, भले ही कितनी प्रबल व मान्य हो,अंतिम नहीं हो सकती | उनकी साहित्यिक भाषा में कहें तो कोई भी सत्य किसी विचारधारा के कोटर में ठहरा नहीं रह सकता |,,[२९]

राजी सेठ का मानना है कि-"विचार धाराएँ साहित्य के क्षेत्र में प्रचलित रही हैं-प्रचलित हैं जिनका लाभ यह है कि वे किन्हीं समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं और विपरीत पहलू यह है कि वे उन्हीं समस्याओं को अंतिम मान कर उन पर विचार विमर्श चलता रहता है, जो समाज के उत्तरोत्तर विकास के बड़े प्रश्नों पर सोचने की आवश्यकताओं को अवरुद्ध करता है |"[३०]

राजी सेठ किसी भी विचारधारा से प्रभावित नहीं है,बल्कि उनका साहित्य उनके स्वयं के विचारधाराओं की सृष्टि हैं |

संदर्भ सूची

१. सुबोध काव्यशास्त्र(भारतीय एवं पाश्चात्य)-डॉ.जालिंदर इंगले,पृष्ठ.२०
२. साहित्य और समीक्षा - डॉ.भगवतशरण अग्रवाल, पृष्ठ. ८
३. साहित्य और समीक्षा - डॉ.भगवतशरण अग्रवाल, पृष्ठ. ९
४. साहित्य और समीक्षा - डॉ.भगवतशरण अग्रवाल, पृष्ठ. ९
५. साहित्य का श्रेय और प्रेय - जैनेंद्र कुमार, पृष्ठ. ३१२
६. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र,डॉ.हरदयाल, पृष्ठ.४०५
७. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र,डॉ.हरदयाल, पृष्ठ.४११
८.सुबोध काव्यशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)-डॉ.जालिंदर इंगले,पृष्ठ. ८६
९.सुबोध काव्यशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)-डॉ.जालिंदर इंगले, पृष्ठ.८६
१०.सुबोध काव्यशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)-डॉ.जालिंदर इंगले,पृष्ठ.८६
११.भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य-चिंतन-डॉ.सभापति मिश्र, पृष्ठ.४६१
१२.सुबोध काव्यशास्त्र(भारतीय एवं पाश्चात्य)-डॉ.जालिंदर इंगले,पृष्ठ. ९६
१३.सुबोध काव्यशास्त्र(भारतीय एवं पाश्चात्य)-डॉ.जालिंदर इंगले, पृष्ठ.९७
१४.प्रेमचंद तथा शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श - डॉ.कल्पना गवली, पृष्ठ.२१
१५.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी : डॉ.पुष्पपाल सिंह, पृष्ठ.२७२-२७३

१६.प्रेमचंद तथा शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श - डॉ.कल्पना गवली, पृष्ठ.२८
१७.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी : डॉ.पुष्पपाल सिंह, पृष्ठ.२७२-२७६
१८.सुबोध काव्यशास्त्र(भारतीय एवं पाश्चात्य)-डॉ.जालिंदर इंगले,पृष्ठ.१०५
१९.समकालीन हिंदी कहानी में समाज संरचना-मोनिका हारित,पृष्ठ.५४
२०.समकालीन हिंदी कहानी में समाज संरचना-मोनिका हारित,पृष्ठ.५४
२१.समकालीन हिंदी कहानी में समाज संरचना- मोनिका हारित,पृष्ठ.५४
२२.आज का लेखन और सांस्कृतिक विघटन-डॉ.नगेन्द्र,धर्मयुग जून-२,१९६८,पृष्ठ,१७
२३.राजेंद्र यादव - खेल-खिलौने, 'अंगारों का खेल', पृष्ठ.१२२
२४.समकालीन हिंदी कहानी में समाज संरचना-मोनिका हारित, पृष्ठ.६४
२५.अस्तित्ववादी हिंदी कहानी - डॉ.चंदा गिरीश, पृष्ठ.१८७
२६.आधुनिक हिंदी उपन्यास व मानवीय अर्थवत्ता-नंदकिशोर नवल, पृष्ठ.५
२७.आधुनिक हिंदी उपन्यास व मानवीय अर्थवत्ता-नंदकिशोर नवल, पृष्ठ.५
२८.आधुनिक हिंदी उपन्यास व मानवीय अर्थवत्ता-नंदकिशोर नवल, पृष्ठ.५
२९.राजी सेठ:कथा सृष्टि एवं दृष्टि- डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.४-५
३०.राजी सेठ:कथा सृष्टि एवं दृष्टि- डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.५